मन्दिर के गुम्बज में अशर्फियां

किसी धनवान् पुरुष ने अपने मन में विचार किया कि मेरे पास धन बहुत है इस वास्ते यदि इस समय इसमें से कुछ धन गुप्त करके रखदूं तो समय पड़ने पर मुझे अथवा मेरे बालकों के काम आवेगा यह निश्चय करके उसने अपने बनवाये हुये सिद्धेश्वर महादेव के गुम्बजदार शिवालय के गुम्बज में गुप्त रीति से धन रक्खा । उस धन को रखते उसे किसी ने भी नहीं देखा फिर उसने अपनी अलग बही में इस प्रकार लिख दिया "सम्वत् १६२५ वीं की साल में उत्तरायण सूर्य, चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की अष्टमी (अष्ठमी) के दिन चार घड़ी दिन चढ़ते सिद्धेश्वर महादेव के मन्दिर के गुम्बज में पन्दरह लाख अशर्फी रक्खी हैं, जब काम लगे तब निकाल लेना ।" इस प्रकार से लिखकर बन्दोबस्त से बही को रखकर साहूकार निश्चिन्त हुआ । कुछ दिनों के बाद वह धनवान् तीर्थाटन करने को गया और दैव योग से तीर्थों में ही उसका अन्त होगया । इस से वह अपने रक्खे हुए धनादि को अपने सन्तानों को बता नहीं सका । पश्चात् उसकी अन्त्येष्टि (अन्त्यैष्ठि) क्रिया आदिक करके उस के साथ के आदमी लड़कों बच्चों सहित घर लौट आए । समय पाकर उसके लड़के बड़े होकर अपने पैत्रिक काम में लगे । व्यापार में बारम्बार टोटा आने से उन्हें धन की आवश्यकता (अवाश्यक्ता) हुई । फिर उन्हों ने ऋण लेकर व्यवहार चलाया । दैव संयोग से फिर व्यापार में हानि हुई और ऋण का रुपया भी डूब गया जब लेनदार लोग तकाजा करने लगे तब बिचारे घबराकर विचारने लगे कि हमारे बाप दादा बहुत धनवान् थे पुराने बही खातों को देखें यदि उसमें कुछ पता लगे और कुछ लेना लोगों पर निकले (निकाले) तो काम चले । उसे वसूल करने का उपाय किया जाय । ऐसा विचार कर के बही खाता देखने लगे । देखते २ जिस बही में गुम्बज वाली पन्दरह लाख अशर्फि की बात लिखी थी वही बही निकली देखते ही बहुत प्रसन्न होकर उन्होंने उसी समय मजदूरों को बुलाकर शिवालय का गुम्बज तुड़वाया । गुम्बज तो टूट गया किन्तु उसमें अशर्फियों का कुछ पता न लगा । तब वे विचारने लगे कि, क्या बही में यह लिखी हुई अशर्फियों की बात झूठी है ? अथवा बात ही हमारी समझ में नहीं आई ? फिर अपने मित्रोंसे बंचवाकर उन्होंने उस पर विचार किया । तब मित्रों की सलाह से दूसरे बही खातों को देखना आरम्भ किया । जिसमें भिन्न भिन्न आसामियों के पाससे उसी वर्ष में पन्दरह लाख अशर्फियों की वसूली मिली और खर्च की जगह में ऐसा लिखा मिला कि, पन्दरह लाख अशर्फियों की तफसील अमुक बही में गुम्बजके नामे लिखी है । ऐसा तफसील सहित पूरा व्यवहार लिखा देखकर सब आश्चर्य में आये और कहने लगे कि हिसाब किताब सब ठीक है लिखा भी साफ है फिर क्या कारण है कि, बात झूंठ पड़ती है बही में तो बात झूंठी लिखी जासक्ती नहीं । इससे जाना कि, या तो गुम्बजमें से धन किसीने चुरा लिया होगा अथवा रखते समय ही कुछ गड़बड़ हुई होगी इस प्रकार

से संदिग्ध बातों को सुनकर बेचारे साहूकार के लड़के बड़ी चिन्तामें रहने लगे । जिस तिस को बही दिखा कर हमेशा पूछा करते किन्तु बहुत दिनों तक पता नहीं लगा । अन्त में कुल के सबसे वृद्ध एक बुद्धिमान् पुरुष के पास जाकर उन्होंने अपना सब वृत्तान्त कहा और बही दिखाई । फिर कहा कि धन नहीं मिला उस की उतनी चिन्ता नहीं है किन्तु मन्दिर के शिखर उतरवाने की बड़ी चिन्ता है । अब हम सब के सामने मुंह दिखाने योग्य नहीं रहे । सब यही कहते हैं कि, यह छोकरे ऐसे कपूत निकले कि बाप ने तो देवस्थान बनाया उन्होंने ढ़वा दिया । इस प्रकार निन्दा सुन सुनकर बहुत दुःख होता है । मरना भला किंतु ऐसे निन्दित जीवन से संसारमें रहना अच्छा नहीं । सो यदि आप कुछ उपाय बताओ जिस से हम दुःख से छूटें तो ठीक है नहीं तो, हम को मृत्यु के अतिरिक्त दूसरा मार्ग नहीं सूझता है । हमारे पास इतना पैसा भी नहीं है जिससे मन्दिर का गुम्बज ठीक करवादें तिस पर लेनदारों के तकाजों से और भी जी दुःखी है । साहूकार के लड़कों की बात को सुन कर उस वृद्ध बुद्धिमान् पुरुष ने उन्हें सन्तोष दिलाया । और बही खाता भली प्रकार देखकर उनसे कहा कि भाई ! तुम किसी प्रकार की चिन्ता मत करो । बहीं में जो कुछ लिखा है सब अक्षर २ सत्य है । किन्तु तुम पहले एक काम करो कि, मैं तुम्हें रुपया देता हूं इस से (इसे) प्रथम मन्दिर का शिखर जैसा था वैसा ही बनवादो । देखना प्रथम जैसा गुम्बज बना हुआ था वैसा ही बनवाना, उसमें कुछ फेर फार न होने पावे, फिर जब चैत्र सुदि अष्टमी (अष्ठमी) आवे तो उस दिन सवेरे ही मेरे पास आना वृद्ध की बातों को सुन कर और रुपया लेकर वे अपने घर आये और मन्दिर का शिखर जैसा पहले था वैसा बनवा कर चैत्र सुदि अष्टमी का मार्ग देखने लगे जब चैत्र सुदि अष्टमी का दिन आया तब उस दिन उपरोक्त वृद्ध पुरुष को अपने घर बुला कर लाये और उसी की आज्ञानुसार उस दिन खूब उत्साह मनाया । उत्साह और आनन्द में जब ४ घड़ी दिन चढ़ गया तब उस वृद्ध पुरुष ने कहा चलो सिद्धेश्वर महादेव का दर्शन करने चलें । फिर सब मन्दिर में दर्शन करने गये । दर्शन करके प्रदक्षिणा फिरते फिरते गुम्बज की छाया दिखा कर उस वृद्ध पुरुष ने कहा कि भाई मन्दिर का शिखर यह है यहां ही तुम्हारी पन्दरह लाख अशर्फी गड़ी है । यहां ही खोदने से वह मिलेगी फिर तो साहूकार के लड़कों ने मजदूर बुला कर उसी जगह को खुदवाई और वहां से ही अशर्फी निकली फिर तो अशर्फियों को पाकर साहूकार की सन्तान फिर से धनवान् होकर सुखी होगई हे शिष्य ! देख बही में जो कुछ लिखा था सो झूठा नहीं था, अक्षर भी स्पष्ट था सब ही बांच सकते थे उसका अर्थ सब ही लोग समझ सकते थे गुम्बज में ही अशर्फियां भी थी किन्तु किसी दूसरे से अशर्फियों का पता नहीं लगा क्योंकि बांचने को तो सब ही बांचते थे किन्तु चैत्र मास की अष्टमी के दिन चार घड़ी दिन चढ़े मन्दिर के शिखर में अशर्फी रक्खी हैं इस वाक्य का अभिप्राय किसी की समझ में नहीं आता था उस वृद्ध पुरुष ने विचार किया कि पन्दरह लाख अशर्फियां मन्दिर के ऊपरि गुम्बज में तो रक्खी जा सकती नहीं हैं क्योंकि ऐसे छोटे शिखर में पन्दरह लाख अशर्फी का अंटना असंभव है इसलिये भूमि में शिखर की छाया में अवश्य रक्खी होंगी क्योंकि

जैसा बहीमें लिखा है उसी समय मन्दिर के शिखर की छाया जिस स्थान पर जावे उसी को मन्दिर का शिखर समझना चाहिये यदि लिखे हुये समय के विरुद्ध किसी दूसरे महीने अथवा घड़ी तिथि में छाया के शिखर में भी देखा जयगा तो कदापि नहीं मिलेगा इस प्रकार से उस लेख के अभिप्राय को जानने वाला बुद्धिमान् वृद्ध पुरुष मिला तब ही यथार्थ अभिप्राय समझ में आया और धन मिला ।

उपरोक्त कथा का सिद्धान्त ।

इसी प्रकार से संस्कृत अथवा प्राकृत भाषा आदि के वेदान्त के ग्रन्थ भी बांचने जानता हो, उसका शब्दार्थ भी समझता हो, कि परमात्मा सर्वत्र पूर्ण है, देह त्रय का द्रष्टा (दृष्टा) है, अवस्था त्रय का साक्षी है, पंच कोशातीत है, सच्चिदानन्द रूप है और यह बात सत्य भी है क्योंकि, देह रूपी शिखर में सच्चिदानन्द आत्मा रूपी धन है और श्रुति स्मृति शास्त्रों रूपी बही में लिखा भी है तथापि ब्रह्मनिष्ठ सद्गुरु द्वारा शास्त्रों का तात्पर्य जाने बिनां आत्म धन की प्राप्ति कदापि नहीं होती है ।

ब्रह्मा के पुत्र नारदमुनि ऋग्वेदादि चारों वेद, शास्त्र पुराण इतिहास आदि सर्व विद्या के ज्ञाता थे किन्तु आत्म ज्ञान न होने से महान् शोक सागर में डूबे रहते थे । अन्त में जब दुःखी होकर सनत्कुमार गुरु की शरण में गये तब उन के उपदेश से निरतिशय सुख रूप पूर्ण आत्मा को अपरोक्ष जान कर दुःख रहित हुए । यह कथा छान्दोग्य उपनिषद् में विस्तार से है ।